लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
वर्ष 03 अंक 50 लखनऊ। सोमवार 04 से 10 सितम्बर-2017
e-mail-pawanprawah@gmail.com
मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

(भाग-15)

पिछले 14 ब अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जौ भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्त्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर में चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता है: ऊर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा कैसे अपने शरीर में बुलाये, उसकी क्या विधि है, ऊर्जा को बुलाने अथवा संग्रह के उपरान्त का अनुभव और शरीर के मुख्यकेन्द्रों में ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-I व विशिष्ट उपचार स्तर-I में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइजेशन व अवरूद्ध चक्र, औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया, ऊर्जा में कमी तथा ऊर्जा प्रवाह में गड़बड़ी की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, विशिष्ट उपचार स्तर-II के विषय में आभा और चक्रों के गूढ़ ज्ञान के बारे में बताया गया है।

15.0 आभा और चक्रों का गूढ़ ज्ञान

15.1 सहज ज्ञान युक्त (मानसिक) सोच और मार्गदर्शन

पहले वर्णित किया गया है कि आप प्रतिकों (चिन्हों) का उपयोग करके ऊर्जा को बुलाकर प्रत्येक ऊर्जा उपचार आप शुरू कर सकते हैं। इसके बाद आपको पहला कार्य अपने रोगी की स्थिति का आकलन करने की प्रक्रिया शुरू करनी होती है। प्रत्येक रोगी के ऊर्जा क्षेत्र में विशिष्ट ऊर्जावान दोषों और विशिष्ट उपचार की जरूरतों के साथ आपको खुद को जोड़ना होगा। इसके लिए आपको प्रत्येक मरीज को एक अनूठे व अलग ढग से इलाज करने की आवश्यकता होगी और उपचार से पहले मरीज की स्थिति के विषय में समझने व जानने का प्रयास करना होगा। यद्यपि आपको ध्यान देना होगा कि रोगी की स्थिति के विषय में सक्रिय रूप से यह प्रक्रिया सभी उपचारों के उपरान्त भी जारी रहती है जिससे आप अपने काम में अपने औधारणात्मक प्रक्रिया/विचारों का उपयोग कर मरीज में निरन्तर सुधार हेतु आपका अनुभव कारगर होता रहे।

प्राथमिक ऊर्जा द्वितीय स्तर में आप अपने मरीज की स्थिति के बारे में, अपने आपको अधिक जोड़ने हेतु तीन मुख्य संकल्पनात्मक विधि का प्रयोग करेंगे:-

1.आपको अपने मस्तिष्क के आभा और चक्रों की स्थिति के बारे में प्राप्त मानसिक और मार्गदर्शन जो कि आपके अर्न्तचक्ष द्वारा सहज ज्ञान प्राप्त होता है।

2.आपकी विवेचना शक्ति- जैसा कि आप अपनी आँखों का उपयोग कर रोगी के आभा और चक्रों के विषय में जानकारी गृहण करते है।

3.आप के हाथों में उत्तेजनायें-खासकर जब आप रोगी के ऊर्जा क्षेत्र पर हाथों के द्वारा ऊर्जा प्रवाहित करने का अभ्यास करते हैं।

आप इन श्रोतों से प्राप्त जानकारी से एक साथ जोड़कर आपको उपचार हेतु प्रयास करना होगा। आप इन अवधारणात्मक विधियों का उपयोग आभा क्षेत्र (औरिक फील्ड), औरिक ऊर्जा की शुद्धता, ऊर्जा में कमी और गड़बड़ी में अवरूद्ध चक्रों, रिसाव व छेद से ऊर्जा प्रवाह में अपने प्राप्त ज्ञान का उपयोग कर सकते हैं। आप इस स्तर का अध्ययन करते हुए सरल ऊर्जावान दोषों के समझना भी सीख सकते हैं। इन दोषों को समझने के लिए आपको, पहले अवधारणात्मक विधियों का गूढ़ अध्ययन करना होगा, यह सहज ज्ञानयुक्त (मानसिक) सोच और मार्गदर्शन की शुरूआत है तथा ऊर्जा उपचार (हीलिंग) के लिए मानसिक जानकारी और मार्गदर्शन प्राप्त करने की क्षमता हेतु एक प्राथमिक महत्वपूर्ण विधि है। हमारी रोज-मर्रा की जागरूकता (सूक्ष्म) अनुभव के स्तर से परे-हमारे व्यस्त सोचमन के साथ, जो वास्तविकता की सतह से स्तर खुद को

प्राप्त होती है। सूक्ष्म अनुभव प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद है इसमें वो सारी जानकारी शामिल है जिसे हमें कभी-कभी जानना चाहते हैं, मरीज की आभा और चक्रों के ज्ञान सहित, मनोवैज्ञानिक और रोगी के जीवन के कारणों के ज्ञान के लिए अनुभवों का योगदान चिकित्सा उपचार के लिए सबसे अधिक फायदेमन्द तरीका है। जिसे उचित तकनीक का उपयोग करके व अभ्यास के माध्यम से इसका विकास सहज भाव से अपनी क्षमताओं से कर सकते हैं। इसलिए फीलिंग उपचार हेतु इस उपयोगी जानकारी को प्राप्त कर रोगी की स्थिति के बारे में, अधिक सचेष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं और इससे योजनाबद्ध रूप में अधिक प्रभावी और लाभकारी उपचार भी दे सकते हैं। उच्च जागरूकता (अत्यन्त सूक्ष्म अनुभव) के इस स्तर के ज्ञान तक पहुँचने के लिए प्राणिक ऊर्जा (हीलिंग) उपचार वाले को स्वयं का ज्ञान और अनुभव बढ़ाकर उच्च जागरूकता का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए ऊर्जा चैनलिंग हेतु सक्षम बनाता है। अक्सर रोगी के उपचार हेतु तभी मदद मिल सकती है जब किसी ऐसे क्षेत्र के अनुभवों से सहायता प्राप्त हो सकती हो जो उच्च स्तर की जागरूकता पर मौजूद है।

यह भी अनुभव किया गया है कि इस प्रकार की उपचारी शक्ति का प्रयोग करने के लिए प्राणिक हीलिंग वाले को एक श्रोत प्रदान कर सकती है, जो शुद्ध होने के क्षेत्र में रहती है। चाहे एक प्राणिक हीलिंग वाला अकेला ही संचालित करता है यह किसी अनुभवी की सहायता से करता है, क्योंकि यह जागरूकता के उच्च स्तर है जो रोगी के उपचार के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इस जानकारी के प्राप्त करने के लिए सहज ज्ञानयुक्त क्षमता का विकास आवश्यक है। अन्तरज्ञान को विकसित करने के लिए सम्यक रूप में समग्र प्रक्रिया को सीखना होगा जिसके बारे में चैतन्य होकर और सही तरीके से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।

15.2.सहज ज्ञानयुक्त तकनीक का उपयोग: एक सहज ज्ञानयुक्त अनुभव के लिए मानसिक जानकारी और मार्गदर्शन प्राप्त करने की प्रक्रिया सीखना प्रारम्भ करना होगा। मन की यह जानकारी प्राप्त करने के लिए यह कैसे काम करता है, और फिर इसे प्राप्त करने के लिए मन एक सटीक और शुद्ध तरीके से उपयोग करके, इस क्षमता को बढ़ाकर उपचार में अधिक सहायता मिलती है।

मानव मस्तिष्क को अक्सर दो भिन्न कार्यों से समझा जाता है: बुद्धिमत्ता या तर्कसंगत मन- जो विचारों के विशिष्ट रास्ते और सहज ज्ञानयुक्त मन (या अन्तरज्ञान) के साथ सोचता है तथा जो सहज ज्ञानयुक्त के बड़े क्षेत्र से जानकारी प्राप्त करने में सक्षम व जागरूक होता है। इन दोनों कार्यों में आमतौर पर (लेकिन पूरी तरह से) दोनों-सेरेब्रलगोलार्द्ध के अनुरूप नहीं है और प्रत्येक के पास अपनी अनूठी क्षमताओं के आधार पर हमारे जीवन में उपयोग का हिस्सा है।

तर्कसंगत दिमाग: बांये गोलार्द्ध के अनुसार- इस दुनिया में निगेटिव, सक्रिय, ध्यान केन्द्रित और सहायता करता है यह विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने में उत्कृष्टता देता है। जैसे-तैयार करने में, विश्लेषण करने में, चीजों की व्याख्या, और विशिष्ट कार्यवाही करने में। दाहिने गोलार्द्ध के अनुसार-सहज ज्ञानयुक्त मनोविज्ञानी, निष्क्रिय, ग्रहणशील और समय और स्थान से परे एक आन्तरिक जागरूकता है। यह इम्प्रेशन प्राप्त करने और चीजों की सहज समझ में आने पर उत्कृष्टता प्राप्त करता है और जागरूकता की वृहद क्षेत्र से जानकारी प्राप्त करने में सक्षम है। मन के यह कार्य- सक्रिय सिद्धान्त (तर्कसंगत दिमाग) और ग्रहणशील सिद्धान्त (सहज मन) कहा जाता है और मानसिक जानकारी प्राप्त करने के लिए एक निश्चित तरीके से इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। सक्रिय सिद्धान्त उसे कहते है जिस पर ध्यान केन्द्रित करने व तैयार करने की क्षमता होती है, पूछताछ के विषय पर जागरूकता को ध्यान देने हेतु वांछित जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। सक्रिय सिद्धान्त तब हटा दिया या पीछे छोड़ दिया जाता है जब ग्रहणशील सिद्धान्त को वांछित जानकारी प्राप्त हो सके। जानकारी आने से पहले, तर्कसंगत मन (सक्रिय सिद्धान्त) ध्यान और इरादे पर केन्द्रित है और फिर नियंत्रण को त्याग दिया जाता है, ताकि सहज ज्ञानयुक्त मन (ग्रहणशील सिद्धान्त) आसानी से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सके। यह एक निश्चित तरीके से उपयोग किया जाता है और जानकारी मांगने और प्राप्त करने की इस पद्धति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है। उपचार शुरू करने के पहले आप खड़े होकर और ध्यान केन्द्रित करे। अपने अर्न्तचक्षु (मस्तिष्क की आंखों) में अपने मरीज की आकृति की कल्पना करें-मात्र एक शरीर की रूपरेखा। अकेले शरीर की रिक्त रूपरेखा पर अपने जागरूपता पर ध्यान केन्द्रित करें, अन्य सभी विचारों और भावनाओं को महत्वविहीन अथवा हटाने की कोशिश करें। इस आकार को अपने दिमाग में जितना केन्द्रित करेंगे उतने ही शीघ्र रोगी की ऊर्जा क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। शरीर की रूपरेखा हेतु यह एकाग्रता शायद कम से कम प्रयास, कम से कम सीखने की आवश्यकता होगी क्योकि थोड़े समय के लिए अकेले इस आकार पर ध्यान देना और ध्यान देते रहने से आपको अनुभव की प्राप्ति होने लगेगी।

क्रमशः अगला अंक 16 पढ़े....